AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

सभी कोर्सों की किताबें हिंदी में उपलब्ध कराएगा लविवि

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। नई शिक्षा नीति के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को सभी पाठ्यक्रमों की पढ़ाई उनकी मातृभाषा में करने का मौका देगा। कई पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम की किताबें अभी भी उपलब्ध नहीं हैं। इसे देखते हुए लविवि प्रशासन ने सभी विभागाध्यक्षों को 8 अप्रैल तक उनके यहां पाठ्यक्रमों की पढ़ाई का माध्यम और किताबों की उपलब्धता की सूचना मांगी है। जहां पर हिंदी माध्यम की किताबें नहीं होंगी, वहां व्यवस्था की जाएगी।

लविवि की डीन एकेडमिक्स प्रो. पूनम टंडन के अनुसार, विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में कही और पढ़ी गई बात ज्यादा आसानी से समझता है। मातृभाषा में पढ़ाई करके शोध और नवाचार को और बेहतर बनाया जा सकता है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में पढ़ाई की बात कही गई है। कला और वाणिज्य संकाय की ज्यादातर पुस्तकों के हिंदी अनुवाद मौजूद हैं, लेकिन विज्ञान संकाय में अब भी काफी किताबें हिंदी में उपलब्ध नहीं हैं। इसे देखते हुए विभागाध्यक्षों से सूचना मांगी गई है। इसके बाद सभी की बैठक बुलाकर हिंदी माध्यम की किताबें उपलब्ध कराने की योजना बनाई जाएगी। प्रयास होगा कि सभी विद्यार्थियों को अंग्रेजी के साथ ही हिंदी भाषा में गुणवत्तापूर्ण किताबें मिल सकें।

विभागाध्यक्षों को आठ तक देनी हैं हिंदी में उपलब्ध किताबों की सूचना

इंजीनियरिंग व फार्मा की पुस्तकों के लिए अभियान

लविवि में इस समय इंजीनियरिंग और फार्मा की पढ़ाई भी हो रही है। इनकी ज्यादातर पुस्तकें अंग्रेजी में ही हैं। लविवि के इस अभियान के बाद इन विषयों में भी हिंदी माध्यम की किताबें उपलब्ध हो सकेंगी। ऐसा होने पर विद्यार्थियों की पढ़ाई में भाषा की बाधा आड़े नहीं आएगी।

> **शिक्षकों से मांगेंगे प्रस्ताव**
>
> विभागाध्यक्षों से सूचना आने के बाद मातृभाषा में किताबें उपलब्ध कराने के लिए शिक्षकों से प्रस्ताव मांगे जाएंगे। इसके बाद किताबों के अनुवाद का काम किया जाएगा जिससे कि सभी विद्यार्थियों को हिंदी माध्यम की किताबें उपलब्ध हो सकें।
>
> – प्रो. पूनम टंडन, डीन एकेडमिक्स

JAGRAN CITY PAGE III

लखनऊ विश्वविद्यालय में अब हिंदी माध्यम से भी होगी पढ़ाई

जागरण संवाददाता, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में सभी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम से भी पढ़ाई होगी। इसके लिए पुस्तकालय में हिंदी माध्यम की किताबें उपलब्ध कराई जाएंगी। कुलाधिपति का निर्देश आने के बाद कार्यवाहक कुलसचिव प्रो. पूनम टंडन ने सोमवार को सभी संकायाध्यक्षों को पत्र भेजकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत आठ अप्रैल तक इस संबंध में कार्ययोजना भेजने के लिए कहा है।

लवि में ज्यादातर पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में कराई जाती है। बीटेक सहित प्रोफेशनल कोर्स भी इसमें शामिल हैं। इससे बहुत से छात्र-छात्राओं को समस्या भी होती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और कुलाधिपति ने उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा पर जोर देने के लिए कहा है। इसको लेकर तैयारी शुरू कर दी है। कार्यवाहक कुलसचिव एवं डीन एकेडमिक प्रोफेसर पूनम टंडन ने बताया कि लवि में पाठ्यक्रमों को हिंदी माध्यम में छात्र-छात्राओं को उपलब्ध कराने को लेकर संकायाध्यक्षों से कार्ययोजना बनाने के लिए पत्र जारी किया गया है। उनसे पूछा गया है कि संकाय के विभागों में कितने पाठ्यक्रम हिंदी माध्यम से संचालित किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पठन-पाठन एवं परीक्षा हिंदी में कराने की आगामी कार्य योजना क्या है।

ये जानकारी भी देनी होगी : विभागों को बताना होगा कि जो पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम से संचालित हैं, उनसे संबंधित पाठ्य पुस्तकें हिंदी में पुस्तकालय में उपलब्ध हैं या नहीं? यदि किताबें नहीं हैं तो अध्ययन सामग्री की सूची बनाकर उनसे संपर्क करें, जो मूल रूप से अथवा अनुवाद करके पाठ्य पुस्तक सामग्री को हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाने में सहायक हों।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू: हिंदी भाषा में शिक्षा देने की तैयारी शुरू

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में अब पाठ्यक्रमों को मातृ भाषा में पढ़ाने की तैयारी है। साथ ही अंग्रेजी पाठ्यक्रमों की किताबों को लाइब्रेरी में हिंदी में रखा जाएगा। इसके लिए कार्यवाहक कुलसचिव प्रो. पूनम टंडन ने सभी संकायाध्यक्षों से जानकारी मांगी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत हिंदी में पठन-पाठन, परीक्षा हिंदी में कराने और अंग्रेजी में संचालित पाठ्यक्रमों से संबंधित किताबें पुस्तकालय में हिंदी में होने का प्रावधान है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ाई शुरू, केकेसी में पांच से कक्षाएं

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय एवं कई डिग्री कालेजों में सोमवार से सम सेमेस्टर की पढ़ाई शुरू हो गई। वहीं, श्री जय नारायण मिश्र पीजी कालेज (केकेसी) में पांच अप्रैल से विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों की सम सेमेस्टर कक्षाएं शुरू होंगी। पहले दिन लवि में जंतु विज्ञान विभाग में बीएससी द्वितीय-चौथे सेमेस्टर प्रैक्टिकल, थ्योरी तथा एमएससी द्वितीय और चौथे सेमेस्टर की कक्षाएं चलीं।

विभागाध्यक्ष प्रो. एम सेरजुद्दीन ने बताया कि पहले दिन छात्र-छात्राओं की उपस्थिति कम रही। अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. एमके अग्रवाल व अन्य ने एमए द्वितीय सेमेस्टर की कक्षाएं लीं। केकेसी की प्राचार्य प्रो मीता साह ने बताया कि बीबीए, आइबी व बीकाम आनर्स की कक्षाएं शुरू हो गई हैं। विज्ञान व वाणिज्य संकाय की कक्षाएं पांच अप्रैल से चलेंगी। 75 फीसद से कम उपस्थिति पर सम सेमेस्टर की परीक्षा से वंचित किए जा सकते हैं।

वायवा आठ, नौ को : एमए अर्थशास्त्र तीसरे सेमेस्टर का वायवा आठ व नौ अप्रैल को है। विभागाध्यक्ष प्रो. एमके अग्रवाल ने इसका नोटिफिकेशन सोमवार को जारी किया। इसका समय सुबह 9.30 बजे से रहेगा।

NBT PAGE 6

हिंदी किताबों को लेकर मांगी जानकारी

■ एनबीटी सं, लखनऊ : एलयू में अंग्रेजी में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों की किताबों को हिंदी में लाइब्रेरी में उपलब्ध कराए जाने के लिए भी कहा गया है। कार्यवाहक रजिस्ट्रार प्रो. पूनम टंडन ने सभी संकायाध्यक्षों से जानकारी मांगी है कि उनके यहां किन पाठ्यक्रमों की पढ़ाई मातृ भाषा में कराई जा रही है और किन पाठ्यक्रमों की किताबें हिंदी में मौजूद हैं। एनईपी के तहत प्रयास किए जा रहे हैं।

PIONEER PAGE 4

लविवि ने संकायाध्यक्षों से मांगी हिन्दी में संचालित कोर्सों की स्थिति

● **आठ अप्रैल तक जानकारी उपलब्ध कराने के कुलसचिव ने दिए निर्देश**

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत स्थानीय भाषा में कोर्सों के संचालन को बढ़ावा दिये जाने को लेकर राजभवन द्वारा मांगी गयी जानकारी को लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय ने सभी संकायाध्यक्षों को निर्देश जारी कर हिन्दी में संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी मांगी है। विवि के कुलसचिव की तरफ से जारी निर्देश में 8 अप्रैल तक जानकारी उपलब्ध कराने को कहा गया है।

विवि की कुलसचिव प्रो. पूनम टंडन के स्तर से जारी आदेश में पूछा गया है कि आपके संकाय के विभागों में कितने पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम से संचालित किये जा रहे हैं तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत पठन,पाठन एवं परीक्षा हिन्दी में कराने की आगामी कार्य योजना क्या है।

साथ ही जो पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम से संचालित किये जा रहे हैं उनसे सम्बंधित पाठ्य पुस्तकें हिन्दी भाषा में पुस्तकालय में उपलब्ध हैं अथवा नहीं। यदि उपलब्ध नहीं है तो उन पाठ्य-पुस्तकों/सन्दर्भ पुस्तकों/अध्ययन सामग्री की सूची बनाकर अध्येताओं से संपर्क करें,जो मूल रूप से अथवा अनुवाद करके पाठ्य सामग्री को हिन्दी भाषा में उपलब्ध करवाने में सहायक हों। कुलसचिव ने अपने आदेश में विभागों से कहा है कि ऐसे सभी प्रयासों को प्रोत्साहित करते हुए आवश्यक कार्यवाही करें, जिससे अच्छी गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकें स्थानीय भाषा में सुलभ हों तथा मातृ भाषा में शिक्षण एवं लेखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जा सके।

AMRIT VICHAR PAGE 4

उच्च शिक्षण संस्थानों से मांगी गई कार्य योजना

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण प्रक्रिया व पाठ्य पुस्तकों की उपलब्धता के विषय में कुलाधिपति सचिवालय से जारी पत्र में आगामी कार्य योजना मांगी है। साथ ही मौजूदा शैक्षिक सत्र में विभिन्न विभागों में संकाय में हिन्दी माध्यम से संचालित किये जा रहे पाठ्यक्रम, पुस्तकालय में उपलब्धता और मातृ भाषा में शिक्षण व्यवस्था को लेकर 8 अप्रैल तक जवाब मांगा है। लखनऊ विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रो. पूनम टंडन ने बताया कि सोमवार को कुलाधिपति सचिवालय से जारी पत्र में संकाय के विभागों में कितने पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम में संचालित किये जा रहे है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत पठन-पाठन व परीक्षा हिन्दी में कराने की आगामी कार्य योजना की तैयारियों को लेकर जवाब मांगा गया है।

TOI PAGE 2

An evening with Raj: Theatre, poetry & a life given to pursuit of excellence

Godhooli Sharma | TNN

Lucknow: In 1953, Lucknow University hosted the Indian Science Congress. The English department of the varsity was asked to prepare plays that could be staged before the scientists of the country during the cultural evenings. A 17-year-old student of the same department wanted to be the part of the plays, but was rejected because he was too thin, had a flat nose and didn't follow script, but his determination got him the job of a curtain boy. Nobody knew that this young lad would one day reach the apex of the theatre.

Padma Shri Prof Raj Bisaria, renowned theatre veteran and former LU teacher who is now 87, was full of nostalgia when he recalled some of special moments of his life on Monday during a conversation with the former head of LU's English department Prof Ranu Uniyal.

The occasion was a discussion organized at Golf Club on Monday by the Lucknow Expressions Society (LES) to mark the release of Bisaria's book having the collection of poems written by him.

With over 100 productions to his name, Bisaria had started Theatre Arts Workshop (TAW) in 1966 with the first play being Shakespeare's Othello. Bisaria also founded the Bhartendu Academy of Dramatic Arts in 1975. Apart from theatre, TAW also introduced other allied performing arts for the very first time, including Irshad Panjatan's Indian mime in 1967 and modern dance by an American dance company, Indian classical dance by Sonal Mansingh in 1970 and other forms, including Hindi theatre, environmental theatre presentation, painting and miniature exhibits. Bisaria joined academics after his postgraduation and later on tried hands in acting in movies but failed. At this point, his mother played the role of an anchor. "I believe anything good about me is because of my mother and what is bad in me is what I am. When the doors of the films were shut on me due to my physique, my mother helped me reach my goal of acting. In 1966, I founded the TAW with four British actors. In the following year, I lost my mother, which felt as if I had lost my only friend," recalled Bisaria.

Theatre veteran & academician Prof Raj Bisaria with Prof Ranu Uniyal

Bisaria also recalled how he met his wife Kiran and fell in love with her. He said that his love story had all the elements of a great Indian blockbuster. "It was an inter-caste and inter-class marriage, for which we were ostracised by the society for a while, but eventually things fell in place, and she became the support and inspiration of his life," he said.

Many in the audience also shared their memories with Bisaria. They included his students, actor Atul Tewari, academician Meenakshi Pahwa and LES founding director Kanak Rekha Chauhan